कविता

13

तरक्की

हर्षवर्धन कुमार*

शहर और गाँव की,
दूरियाँ पाटी गयीं।
कितनी हुई तरक्की,
इसकी पर्चियाँ बाँटी गयीं।
सड़क जब चौड़ी हुई
पेड़ सब काटे गये।
टीवी और फोन नये
हर घर में आते गये।
गाँव की मंडली
दिखती नहीं चौपालों में।
लोग सब बैठे हैं
टीवी के सामने।
छोटे-छोटे बच्चे भी
मोबाइल लगे थामने।
कूड़े के ढ़ेर हैं,
मैदानों के सामने।
हमको नहीं चिंता
अब किसी और की।
वाह रे तरक्की,
हमारे इस दौर की।

* *निदेशक*, बेनी एजुकेशनल सॉल्यूशंस एंड टेक्नोलॉजीज़ फाउंडेशन,C/o घनश्याम शर्मा, सी-2/552, शीर्ष मंजिल (Top Floor),मार्ग संख्या-8, दूसरा पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली 110 094